Topic:- M.J.C. (Paper-1) Semester-1
(Glory of Indian Literature)

* वेदांग (Vedang)

प्रस्तावना:—

वेदांग वेदों के अध्ययन संरक्षण और सही अर्थ ग्रहण करने के लिए विकसित सहायक शास्त्र है। यदि वेद ज्ञान है, तो वेदांग उस ज्ञान को समझने की विधि है।

वेदांगों का विकास उत्तर-वैदिक काल में हुआ, जब वेदों की भाषा जटिल होती जा रही थी और उनके शुद्ध उच्चारण एवं व्याकरण की आवश्यकता बढ़ी।

वेद + अंग = वेद का अंग/भाग
अर्थात वेद के अध्ययन हेतु आवश्यक सहायक विषय

- कुल वेदांग = 6
- उद्देश्य → वेदों की शुद्धता, धारणा और अनुष्ठान की विधि सुनिश्चित करना।

⟹ छह (6) वेदांग (षड्-वेदांग)

1. शिक्षा (Phonetics)

विषय:- उच्चारण, स्वर, मात्रा, बल, संधि
मंत्रो के शुद्ध उच्चारण का विज्ञान

महत्व:- • वैदिक मंत्रों की मौखिक परंपरा को सुरक्षित रखना।
• वैदिक मंत्रों की मौखिक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की परंपरा को सुरक्षित रखना।

P.T.O

Scanned with OKEN Scanner

• स्वरभंग से अर्थ परिवर्तन संभव
• भारतीय ध्वनिविज्ञान की प्रारंभिक नींव

2. कल्प (Rituals):-

विषय:- यज्ञ विधि और संस्कारों के नियम
श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र

प्रमुख ग्रन्थ:-
• आपस्तम्ब धर्मसूत्र
• गौतम धर्म सूत्र

सामाजिक नियमों का विकास
वर्णाश्रम व्यवस्था का विस्तार

3. व्याकरण (Grammar)

विषय:- शब्दरचना और भाषा का शास्त्रीय स्वरूप
प्रमुख विद्वान → पाणिनि
प्रमुख ग्रन्थ:— अष्टाध्यायी
विश्व का प्राचीनतम व्यवस्थित व्याकरण
संस्कृत भाषा का मानकीकरण

4. निरुक्त (Etymology)

विषय:- वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ
प्रमुख ग्रन्थ:- यास्क द्वारा रचित निरुक्त
वैदिक भाषा की दार्शनिक व्याख्या
भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन की शुरुआत।

Scanned with OKEN Scanner